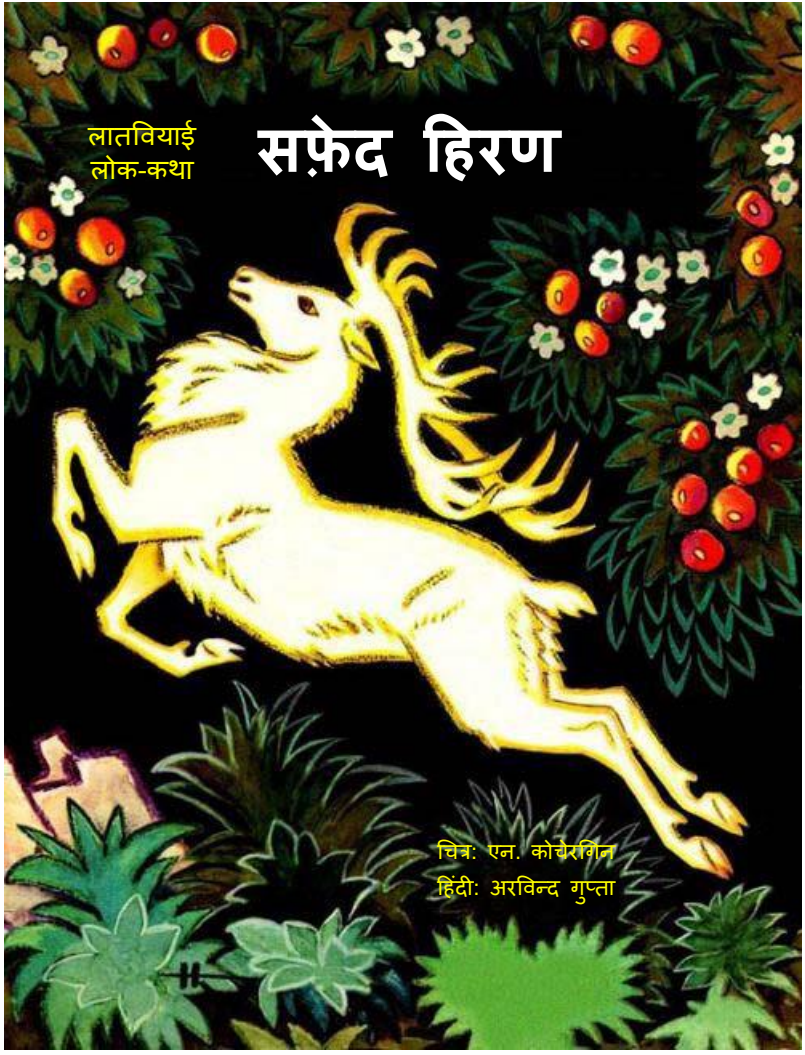

लातवियाई
लोक-कथा

सफ़ेद हिरण

चित्र: एन. कोचेरगिन
हिंदी: अरविन्द गुप्ता

सुनो, मेरी बात ज़रूर सुनो,

यह पहेली बहुत लंबी नहीं है:

कभी एक महान सफेद हिरण था,

उसके सींग बहुत मजबूत थे.

हर इंसान ने उसे साफ़-साफ़ देखा

लेकिन कोई भी उसे पकड़ न पाया.

एक समय की बात है दो भाई थे. वे नदी के किनारे दो बाँझ के पेड़ों के समान मजबूत एक साथ बड़े हुए थे. एक दिन उनके पिता ने उनसे कहा, “अच्छा मुझे सच-सच बताओ कि तुम कौन सा व्यापार चुनोगे.”

उनके बेटों ने पहले तो सिर हिलाया, लेकिन अंत में कबूल किया, "हम बढ़ई बनना चाहते थे. लेकिन हम शिकारी बनना पसंद करेंगे और जंगली बत्तखों का शिकार करेंगे.''

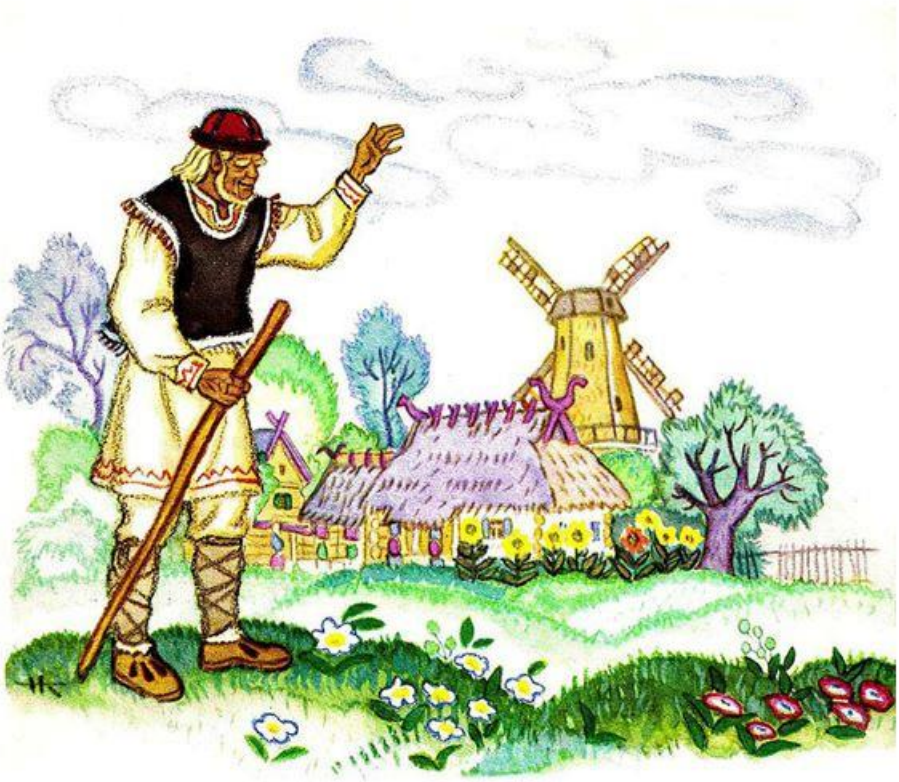

पिता ने उनकी बात सुनी और फिर प्रत्येक बेटे को एक धनुष और तीर और एक अच्छा कुत्ता दिया. फिर उन्होंने बेटों को गेट तक छोड़ा और उन्हें अपनी शुभकामनाएं दीं.

उसके बाद भाई निकल पड़े. थोड़ी देर बाद उनकी नजर जंगली बत्तखों के झुंड पर पड़ी. उन दोनों ने अपने तीर चलाने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी हाथ नहीं लगा. तब तक उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि वे घने जंगल में भटक गए थे और उन्हें बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा था. हालाँकि उनके पास बहुत कम खाना बचा था, फिर भी उन्होंने फैसला किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे हिम्मत नहीं हारेंगे.

अचानक उन्हें दो हिरण दिखाई दिये. जब भाइयों ने धनुष उठाया, तो जानवर उनसे मानवीय आवाज़ में बात करने लगे. “हमें तीर मत मारो. जरूरत के समय हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे," हिरणों ने कहा.

फिर दोनों भाई अपने रास्ते पर चलते रहे. जल्द ही उन्हें दो भेड़िये दिखाई दिये. उन्होंने अपना धनुष उठाया, लेकिन भेड़ियों ने कहा, “हमें तीर मत मारो. जरूरत के समय हम तुम्हारी ज़रूर मदद करेंगे.”

वे एक बार फिर अपने रास्ते पर आगे बढे.
जल्द ही उनकी नज़र दो खरगोशों पर पड़ी.
भाइयों ने फिर से धनुष उठाए, लेकिन
खरगोशों ने कहा, “हमें तीर मत मारो.
जरूरत के समय हम तुम्हारी मदद करेंगे.”

इस प्रकार प्रत्येक भाई को जंगल के जानवरों के बीच तीन सच्चे दोस्त मिले: एक हिरण, एक भूरा भेड़िया और एक खरगोश, उनके वफादार कुत्ते तो उनके साथ पहले से ही थे.

वे तब तक चलते रहे जब तक कि वे एक चौराहे पर नहीं पहुंचे. वहां वे इस बात पर बहस करने लगे कि वे कौन सी सड़क लें. आख़िरकार उन्होंने निर्णय लिया कि एक भाई एक रास्ता लेगा और दूसरा भाई दूसरा रास्ता लेगा, और प्रत्येक अपना-अपना भाग्य तलाशेगा. अलग होने से पहले उन्होंने फैसला किया कि उनमें से प्रत्येक अपना चाकू एक पुराने ओक के पेड़ के तने में गाढ़ देगा. बाद में दोनों भाई यह देखने के लिए घटनास्थल पर वापस आएंगे कि उसका दूसरा भाई कैसा प्रदर्शन कर रहा था. यदि उसका चाकू चमकदार और तेज़ होगा तो इसका मतलब होगा कि वह अच्छी तरह से शिकार कर रहा था. अगर उसके चाकू में जंग लग गई होगी तो इसका मतलब होगा कि वह मुसीबत में फंस गया है और उसे अपने भाई की मदद की ज़रूरत है.

फिर दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को अलविदा कहा. एक भाई ने बायीं राह पकड़ी, जबकि दूसरे ने दाहिनी राह पकड़ी.

बड़ा भाई एक दिन तक चलता रहा लेकिन उसे कुछ नहीं मिला. वह दूसरे दिन भी चलता रहा पर फिर भी उसे कुछ भी नहीं मिला. फिर, तीसरे दिन, उसने एक टूटा हुआ महल देखा जिसका सामने और किनारे देवदार के बने थे और उसकी मीनार बादलों में खो गई थी. हालाँकि बाहर कोई नहीं था, एक युवा युवती खिड़की के पास बैठी थी.

"मुझे बताओ, सुंदर युवती, सब लोग कहाँ गए हैं?" बड़े भाई ने पूछा.

“वे महान सफेद हिरण का पता लगाने के लिए गए थे, लेकिन सभी लोग भूरी चट्टानों और पत्थरों में बदल गए हैं. मेरे गरीब पिता भी उनमें से एक हैं.

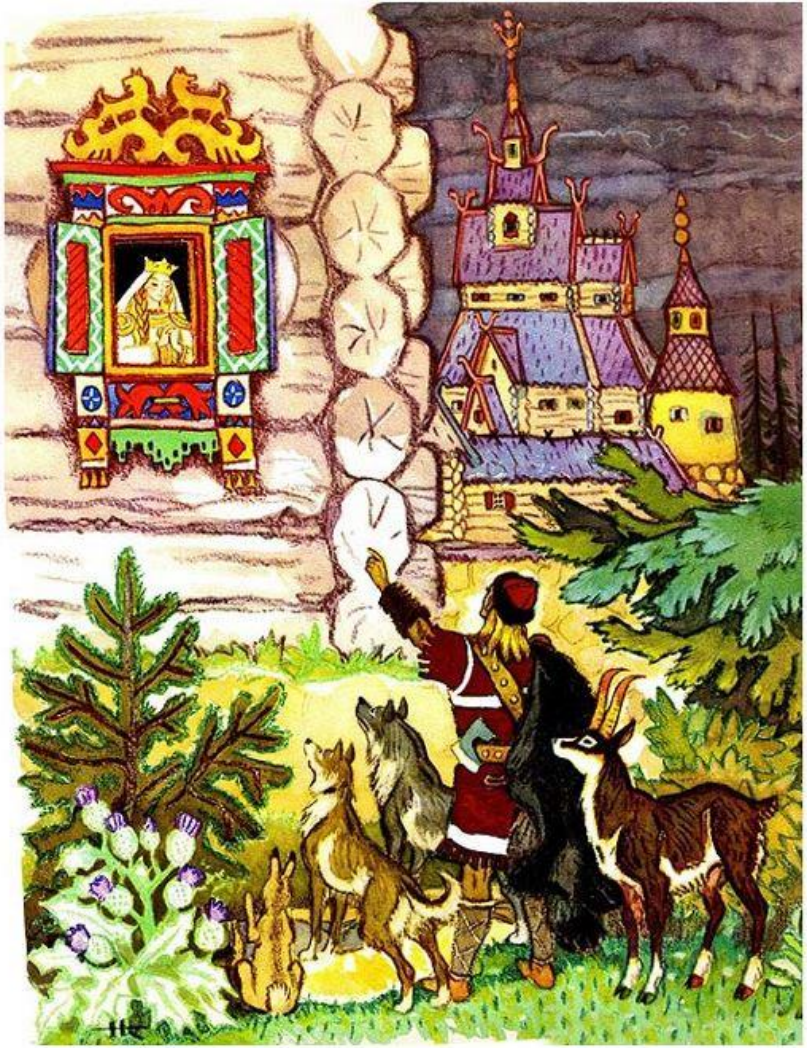

“चिंता मत करो, युवती. वे बिना किसी मददगार के गए होंगे, लेकिन देखो मेरे जंगल में कितने दोस्त हैं! मेरे दोस्त महान सफेद हिरण का पता लगाने में मेरी मदद करेंगे, और फिर मैं तुम्हारे पिता को भी बचा लूँगा."

पहेली छोटी थी, लेकिन कहानी लंबी है.

जब बड़ा भाई द्वार पर पहुंचा तो उसने एक विशाल सफेद हिरण को दौड़ते हुए देखा. वह अपने हिरण, भूरे भेड़िये, कुत्ते और खरगोश के साथ उसके पीछे दौड़ा. लेकिन यह उतना आसान नहीं था जितना उसने सोचा था, क्योंकि सफेद हिरण अचानक गायब हो गया था, और जहाँ वो गायब हुआ था वहां वो हल्की धुंध की एक निशानी छोड़ गया.

एक बूढ़ी औरत पास के जंगल के किनारे आग के पास बैठी थी. बड़ा भाई उसके पास गया और बोला, "क्या आप मुझे अपनी आग में हाथ सेंकने देंगी, दादी?"

"हाँ करो. लेकिन तुम मुझे परेशान नहीं करना. लेकिन पहले तुम मुझे अपने जानवरों को थपथपाने दो. मैं उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी."

"आप ज़रूर थपथपाएं."

जैसे ही बुढ़िया ने जानवरों को छुआ, वे भूरे पत्थरों और चट्टानों में बदल गए, और साथ में बड़ा भाई भी.

इस बीच, छोटा भाई एक घने जंगल में इधर-उधर भटकता रहा. आख़िरकार वह एक राज्य के पास आया जहाँ वह राजा की भेड़ें चराने के लिए रुक गया.

शीघ्र ही राज्य पर भयानक विपत्ति आ पड़ी. समुद्र मंथन के बाद एक बड़ा अजगर रेंगकर बाहर निकला और उसने मांग की कि राजा की तीन बेटियों को उसे खाने के लिए दिया जाए. अजगर ने कहा कि यदि उसकी इच्छा पूरी नहीं की गई, तो वह अपनी पूंछ से समुद्र को मथ देगा और फिर बड़ी और ऊंची लहरें राजा के शहरों में बाढ़ ला देंगी.

राजा का दिल टूट गया. उसने अपनी सबसे छोटी बेटी
की शादी किसी ऐसे व्यक्ति से करने का वादा किया
जो अजगर को मार सके. बात दूर-दूर तक फैल गई,
लेकिन किसी ने भी आगे आने का साहस नहीं किया.

राजा ने अपनी बेटियों के भाग्य पर शोक व्यक्त किया, लेकिन आंसुओं और आहों से उसे कोई मदद नहीं मिली. अगली सुबह उसकी बड़ी बेटी को भोजन के लिए अजगर के पास ले जाना था.

यह बात छोटे भाई को पता चली. वह यह नहीं समझ सका कि राजकुमारी अजगर के पेट में अपना जीवन क्यों समाप्त करे. पूरे दिन वह भेड़-बकरियों की देखभाल करता रहा, लेकिन रात के दौरान उसने और उसके वफादार जानवरों ने एक शक्तिशाली तलवार बनाई.

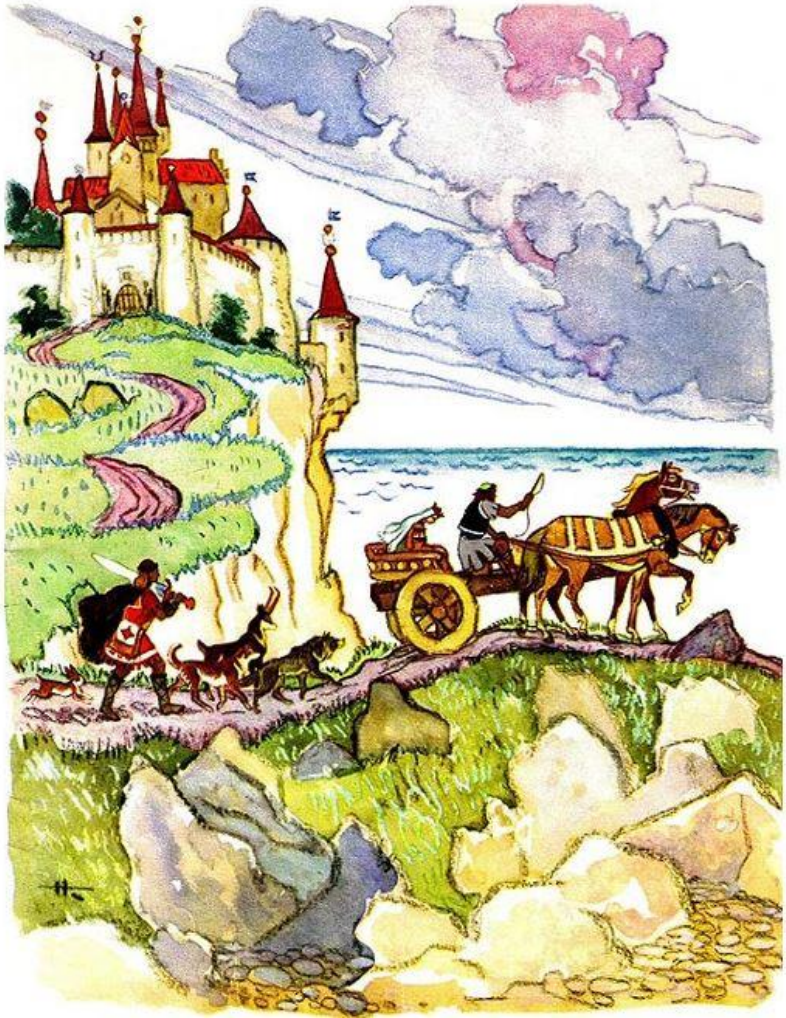

भोर होते ही एक महल का सईस सबसे बड़ी राजकुमारी को घास के मैदान से गुजरते हुए अजगर के पास ले गया, जहां छोटा भाई भेड़-बकरियों की देखभाल कर रहा था.

'सुनो! आप कहां जा रहे हैं?" चरवाहे ने सईस से पूछा.

“अजगर के पास. हम और कहाँ जा रहे होंगे? क्या तुम इतने बहादुर हो कि तुम अजगर के दांत गिनना चाहोगे, चरवाहे?"

"मैं कोशिश कर सकता हूँ," छोटे भाई ने उत्तर दिया और वो भी गाड़ी के पीछे चल दिया.

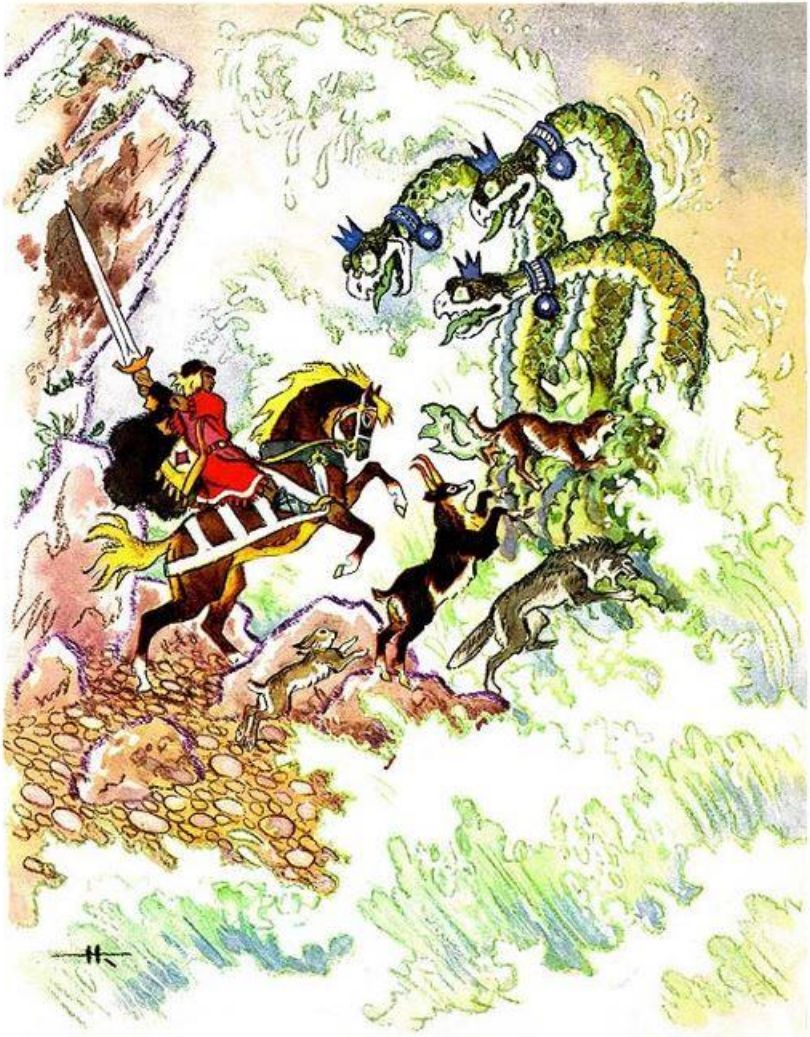

सईस ने समुद्र के किनारे रेत पर गाड़ी रोक दी. सबसे बड़ी राजकुमारी फूट-फूट कर रोने लगी और लोगों से अपने बचाव के लिए आने की विनती करते हुए नीचे उतर गई. लेकिन नहीं, सईस तुरंत घोड़ों को पानी के किनारे और मुसीबत से दूर ले जाया, यह कहते हुए कि वह निहत्था था और वो अजगर का अकेले मुकाबला नहीं कर सकता था.

तभी समुद्र काला और भयानक हो गया और लहरों से तीन सिर वाला अजगर प्रकट हुआ.

छोटे भाई के वफादार जानवरों ने अजगर पर हमला कर दिया, जबकि वह घोड़ों में से एक पर कूद गया और अपनी शक्तिशाली तलवार के एक ही वार से अजगर के तीन सिर काट दिए. फिर उसने उनकी जीभें काट दीं और उन्हें अपने चरवाहे के थैले में फेंक दीं. और फिर किसी से एक शब्द भी न कहते हुए, वह चुपचाप फिर से अपनी भेड़-बकरियों के पास वापस चला गया.

इस बीच, सईस नायक की भूमिका निभाना चाहता था और उसने राजकुमारी से कहा, "देखा? मैंने तुम्हें बचा लिया! लेकिन ध्यान रखना, तुम किसी को यह मत बताना कि चरवाहा भी वहां था, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूंगा. यदि राजा तुमसे पूछे, तो तुम कहना, सईस मुझे समुद्र तक ले गया और फिर वापस ले आया. उसे ही पुरस्कार मिलना चाहिए."

राजकुमारी के पास सहमति देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि वह अपनी जान नहीं खोना चाहती थी.

अगले ही दिन समुद्र से छह सिरों वाला एक राक्षस प्रकट हुआ.

वही सईस अब राजा की दूसरी बेटी को राक्षस के भोजन के लिए ले गया, और उसी घास के मैदान से गुजरा जहां छोटा भाई भेड़-बकरियों की देखभाल कर रहा था. इस बार भी चरवाहे ने राजकुमारी को बचा लिया. उसने अजगर की छह जीभें काट दीं और उसने उन्हें फिर से अपने थैले में फेंक दीं.

तीसरे दिन वही सईस राजा की सबसे छोटी बेटी को अजगर के खाने के लिए ले गया, तीसरी बार उस घास के मैदान से गुज़रा जहाँ छोटा भाई भेड़-बकरियाँ चरा रहा था. और तीसरी बार भी चरवाहे ने गाड़ी का पीछा किया.

तीसरी बार सईस ने समुद्र के किनारे रेत पर गाड़ी रोकी. सबसे छोटी राजकुमारी फूट-फूट कर रोने लगी और किसी से उसे बचाने की गुहार लगाने लगी. लेकिन नहीं, तीसरी बार भी सईस जल्दी से घोड़ों को पानी और मुसीबत से दूर ले गया, यह कहते हुए कि वह निहत्था था और अकेले अजगर से नहीं निपट सकता था.

तभी समुद्र काला और भयानक हो गया और लहरों से एक नौ सिर वाला अजगर प्रकट हुआ. छोटे भाई के वफादार जानवरों ने उस पर हमला कर दिया, जबकि उसने अपनी शक्तिशाली तलवार के एक ही वार से अजगर के नौ सिर काट दिए. इस बार जब सईस नहीं देख रहा था तब सबसे छोटी राजकुमारी ने अपनी अंगूठी चरवाहे को दे दी. छोटे भाई ने झुककर अजगर की नौ जीभें काट दीं और उन्हें अपने चरवाहे के थैले में फेंक दीं. किसी से एक शब्द भी न कहते हुए, जैसे कि यही होना चाहिए था, वह चुपचाप अपनी भेड़-बकरियों के पास वापस चला गया.

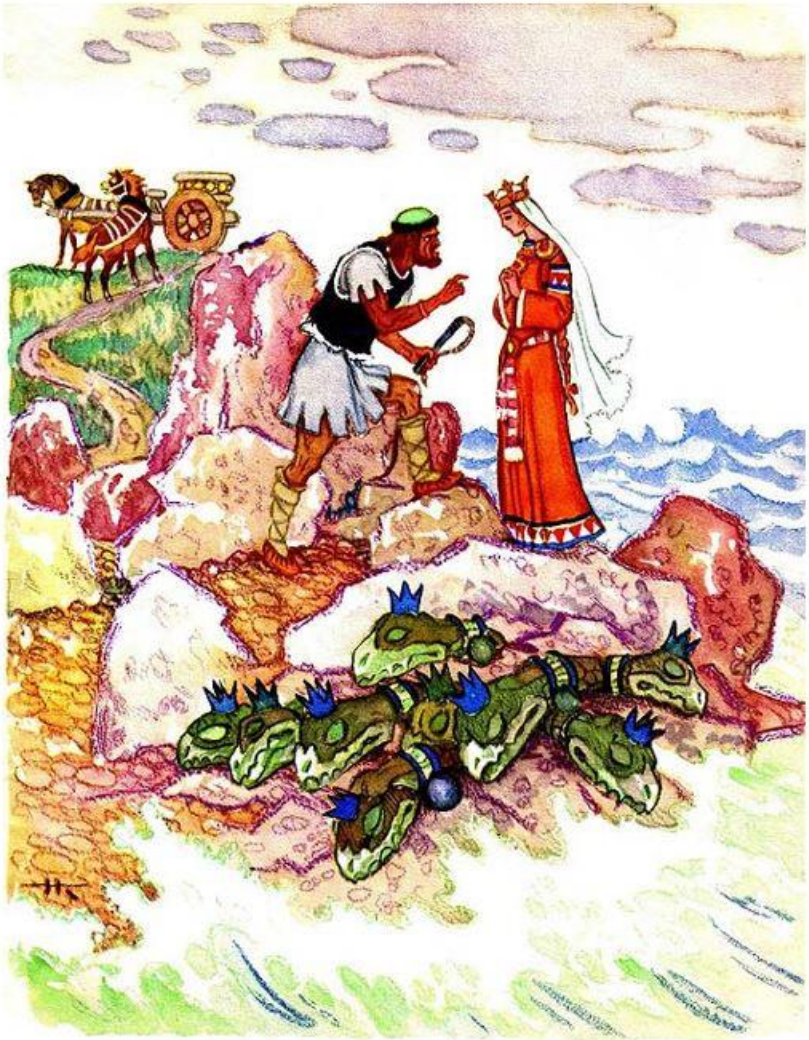

इस बीच, सईस नायक की भूमिका निभाना चाहता था और उसने राजकुमारी से कहा, “देखा? मैंने तुम्हें बचाया है! लेकिन ध्यान रखना, तुम किसी को यह मत बताना कि चरवाहा भी वहां था, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूंगा. यदि राजा तुमसे पूछे, तो तुम कहना, सईस मुझे समुद्र तक ले गया और फिर वापस ले आया. उसे ही पुरस्कार मिलना चाहिए."

सबसे छोटी राजकुमारी के पास सहमति देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि वह अपनी जान नहीं खोना चाहती थी.

इस बीच, राजा खुशी से अभिभूत हो गया. उसने सईस को गले लगाया और कहा, “तुमने मेरी सभी बेटियों को भयानक मौत से बचाया है. अब मेरी वसीयत सुनो:

“मैं तुम्हें शादी में सबसे छोटी राजकुमारी और इसके अलावा अपना आधा राज्य दूंगा.”

जैसे ही राजा ने कहा, उसने अपना वादा पूरा भी किया.

शादी तीन दिन बाद होनी थी.

लेकिन चरवाहे का क्या? खैर, उसने अपना थैला उठाया और महल की ओर चल दिया.

जब सबसे छोटी राजकुमारी ने उसे देखा तो उसने अपने पिता से कहा, "मैं उसी से शादी करूंगी जिसके पास मेरी अंगूठी है और जिसने असलियत में मुझे अजगर से बचाया है."

तभी सईस ने राजकुमारी को शराब का एक प्याला दिया. राजकुमारी ने एक घूंट पी और प्याला चरवाहे को दे दिया. जब सईस नहीं देख रहा था तो चरवाहे ने अंगूठी प्याले में डाल दी.

तब राजकुमारी ने राजा से कहा, "उसी ने मुझे बचाया है!"

लेकिन राजा ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया.

"अगर मेरी अंगूठी पर्याप्त सबूत नहीं है, तो मैं उस व्यक्ति से शादी करूंगी जिसके पास अजगर की जीभें होंगी."

"आओ," राजा ने सईस से कहा, "हमें अजगर की जीभ दिखाओ, क्योंकि शादी की दावत हमारा इंतजार कर रही है."

लेकिन अगर सईस के पास तो वे नहीं थीं तो वह उन्हें कहां से लाता? वो कुछ भी नहीं कह सका.

इस बीच, छोटा भाई राजकुमारी के पास आकर खड़ा हो गया और उसने राजा को अजगर की सभी अठारह जीभें दिखाईं.

राजा ने कहा कि चरवाहे को सोने के कपड़े पहनाए जाएं और उसकी सबसे छोटी बेटी से शादी की जाएगी, जबकि धूर्त और डरपोक सईस को महल से हमेशा के लिए निकाल दिया जाएगा.

इस प्रकार छोटे भाई ने सुंदर राजकुमारी से विवाह किया और उसके अलावा उसे आधा राज्य भी मिला. उस दिन से उसका जीवन सुखमय हो गया.

हालाँकि, एक दिन उसने ओक के पेड़ के पास जाने और अपने भाई के चाकू को देखने का फैसला किया. उसमें पूरी तरह से जंग लग चुकी थी और इसका मतलब था कि उसका भाई किसी बड़ी मुसीबत में फंसा था. हालाँकि उसे अपनी पत्नी से अलग होने से नफरत थी, छोटे भाई ने अपने वफादार कुत्ते, हिरण, भेड़िये और खरगोश को बुलाया और फिर वो अपने भाई की तलाश में निकल पड़ा.

वह तब तक चलता रहा जब तक कि वह एक टूटे हुए महल के पास नहीं पहुंच गया जिसका सामने और किनारे देवदार से बने थे और बुर्ज बादलों में खो गया था. हालाँकि बाहर कोई नहीं था, एक युवा युवती खिड़की के पास बैठी थी.

छोटे भाई ने कहा, "मुझे बताओ, सुंदर लड़की, सब लोग कहाँ गए हैं?"

“वे महान सफेद हिरण का पता लगाने के लिए गए थे, लेकिन वे सभी भूरे चट्टानों और पत्थरों में बदल गए हैं. इधर एक और शिकारी आया था. वह भी सफेद हिरण की तलाश कर रहा था.

“क्यों, वह मेरा भाई था! मुझे उसे बचाना ही होगा.”

पहेली छोटी थी, लेकिन कहानी लंबी है.

जब छोटा भाई द्वार पर पहुंचा तो उसने विशाल सफेद हिरण को दौड़ते हुए देखा. वह अपने वफादार जानवरों के साथ उसके पीछे दौड़ पड़ा. लेकिन यह उतना आसान नहीं था जितना उसने सोचा था, क्योंकि सफेद हिरण गायब हो गया था, और वो हल्की धुंध के साथ उस स्थान को चिह्नित कर गया था.

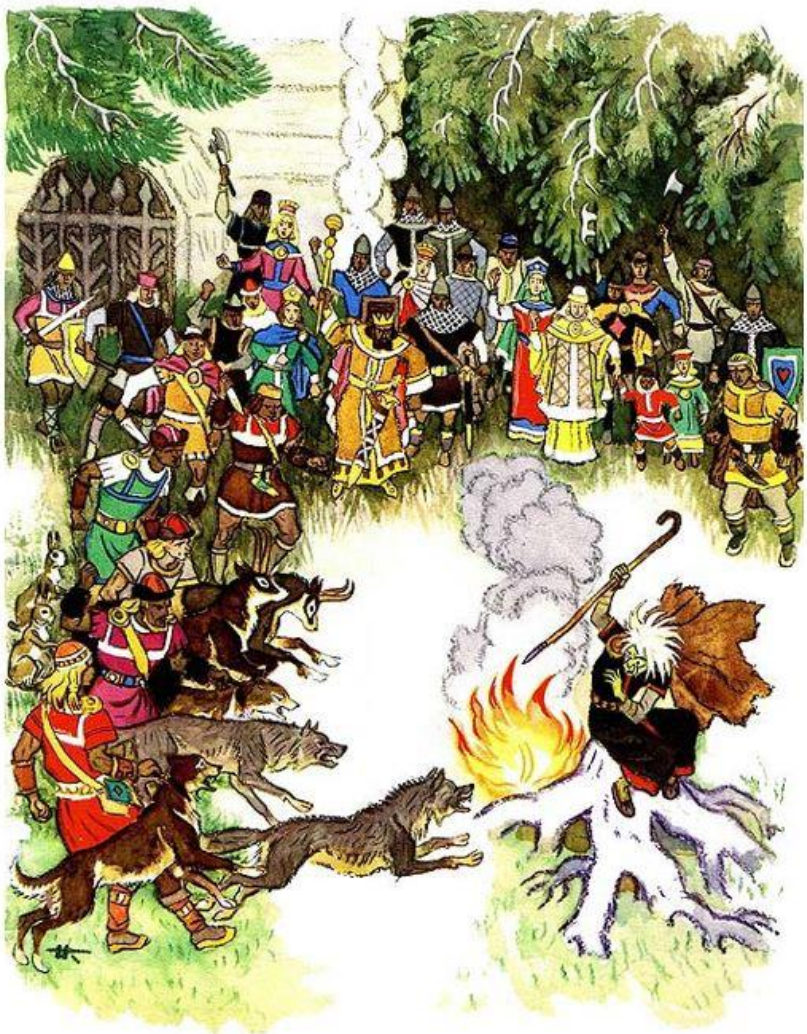

एक बुढ़िया पास के जंगल के किनारे आग के पास बैठी थी. छोटा भाई उसके पास गया और बोला, "मुझे बताओ, दादी, ये सभी भूरे पत्थर और चट्टानें यहाँ क्या कर रहे हैं?"

“पहले मुझे अपने जानवरों को थपथपाने दो. मैं उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी,'' उसने कहा. "फिर मैं तुम्हें बताऊंगी."

"अरे नहीं. तुम लोमड़ी की तरह धूर्त हो, लेकिन मैं भी मूर्ख नहीं हूँ. देखो मेरी तलवार कितनी तेज़ है?”

और फिर बूढ़ी चुड़ैल को कबूल करना पड़ा. “ये चट्टानें कभी लोग थे और ये पत्थर जानवर थे,” उसने कहा. "तुम्हारा भाई उनमें से एक है."

"मुझे बताओ कि मैं उस जादू को कैसे तोड़ूं, और मत भूलो, मेरी तलवार बहुत तेज़ है."

“तुम यह आग देख रहे हो? उसमें से कुछ राख लेकर चट्टानों और पत्थरों पर छिड़क दो.”

छोटे भाई ने वैसा ही किया. सचमुच, चट्टानें लोगों में बदल गईं, लोगों का एक पूरा साम्राज्य, उनके बीच उनका राजा भी था. और वहाँ उसका बड़ा भाई और उसके वफादार जानवर भी थे. सभी जानवर चुड़ैल पर टूट पड़े और उसका वहीं अंत हो गया.

हर कोई कितना खुश था! राजा ने बड़े भाई से अपनी बेटी की शादी कर दी, क्योंकि चुड़ैल ने उस पर भी जादू कर दिया था, और जादू टूटने तक राजकुमारी कभी भी महल नहीं छोड़ सकती थी.

छोटा भाई अपनी पत्नी के पास लौट आया और वे हमेशा खुशी से रहने लगे.

लेकिन सफ़ेद हिरण का क्या हुआ?

जिस क्षण चुड़ैल मरी, उसी क्षण सफेद हिरण एक पेड़ के तने पर फिसल गया और फिर चुड़ैल ने उस पर जो जादू किया था, वह हमेशा के लिए टूट गया. तब से वह सफेद हिरण जंगलों में स्वतंत्र रूप से घूमता है, और उसने कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया.